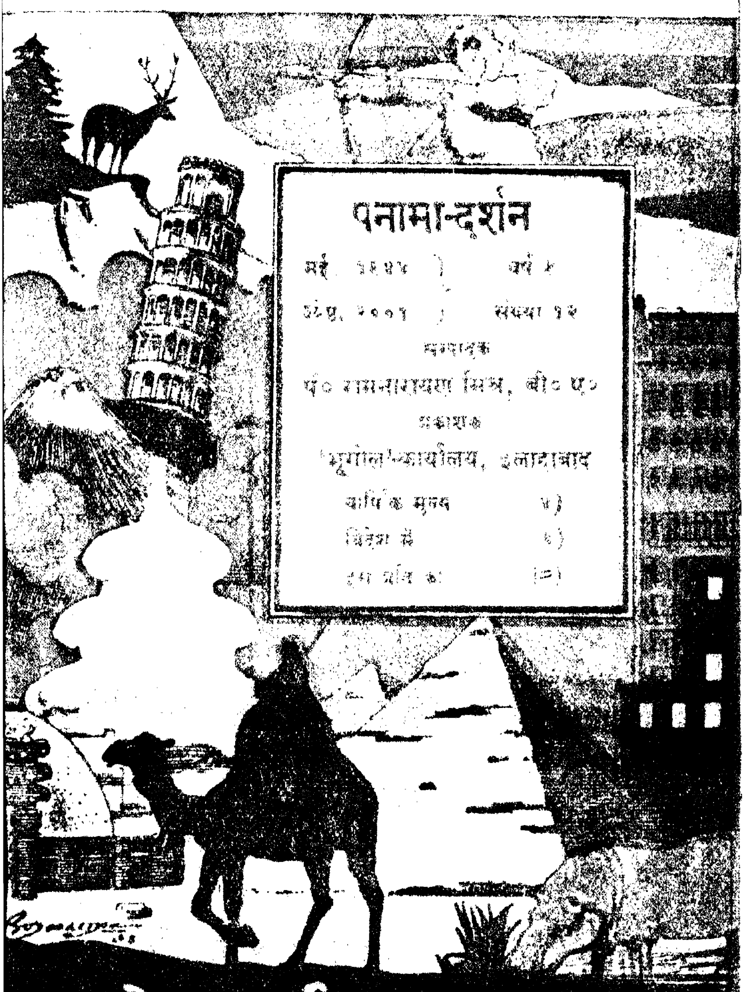
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—५६



पनामा-दर्शन

मई, १९४४) वर्ष ४

ज्येष्ठ, २००१) संख्या १२

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ४)

विदेश में ६)

इस प्रति का ।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ
१—स्थिति सीमा, तथा विस्तार	...	१
२—जलवायु	...	९
३—वनस्पति और पशु	...	१०
४—पनामा रेलवे	...	१४
५—पनामा का [illegible]	...	२१

स्थिति

स्थिति सीमा, तथा विस्तार

पनामा का प्रजातन्त्र ४२५ मील लम्बा है। इसकी औसत चौड़ाई ७० मील है। इसका दक्षिणी भाग विषुवत रेखा से केवल ७ अंश दूर है। उत्तरी भाग ६°५०′ अंश दूर है। यह प्रायः उन्हीं अक्षांशों में है जिनमें लंका स्थित है। पनामा का स्थल संयोजक कुछ पूर्व से पश्चिम की ओर चला गया है। प्रशान्त महासागर यहां दक्षिण की ओर दिखाई देता है। इसी से प्रथम योरुपीय अन्वेषक बल्बोआ ने प्रशान्त महासागर का नाम ही दक्षिणी सागर रक्खा। पनामा-प्रजातन्त्र की समस्त स्थल सीमा केवल ४०० मील लम्बी है। २०० मील लम्बी स्थल सीमा उत्तर की ओर इसे कोस्टारिका देश से अलग करती है। दक्षिण की ओर २०० मील लम्बी स्थल सीमा कोलम्बिया और पनामा देश के बीच में चली गई है। पनामा का समुद्र-तट १२०० मील लम्बा है। प्रशान्त तट का ७०० मील लम्बा है शेष ५०० मील अटलांटिक सागर की ओर है।

अमरीका की जो पर्वत श्रेणी एलास्का से पेटे-

गोनिया तक चली गई है। वह टूट कर यहाँ बिखरी हुई पहाड़ियों के रूप में दिखाई देती है। इनके बीच बीच में नीचे नीचे पठार हैं। कुलेब्रा के पास दर्रे की उँचाई समुद्र-तल से केवल २६० फुट है। कोस्टारिका की सीमा के पास सेरो डेल पिकाचो की चोटी सब से अधिक ऊंची है। इसकी उंचाई समुद्र-तल से ७००० फुट है। पश्चिमी प्रान्तों में चार पर्वत ५००० फुट ऊँचे हैं। पनामा-स्थल संयोजक के बीच वाले भाग इन पर्वतों की ऊंचाई कम रह गई है। कोलम्बिया की सीमा के पास फिर इनकी उंचाई बढ़कर ५००० फुट हो गई है।

पनामा प्रजातन्त्र निम्न प्रान्तों में बटा हुआ है। (१) बोकास डेल टोरो (२) चीरीक्वी (३) वेराग्वास, (४) लास सांटोस (५) कोकला (६) कोलन और पनामा। इनमें कोकला प्रान्त सबसे छोटा है। पनामा प्रान्त सबसे अधिक बड़ा है और समस्त देश का एक तिहाई है। बोकास डेल टोरो अर्थ है। सांड़ के मुख। यह उत्तरी-पश्चिमी सिरे पर स्थित है। यहीं चीरीक्वी का प्रसिद्ध अनूप है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका

ने यहीं अपना एक जहाज़ी अड्डा बनाने के लिये इस स्थान को मोल लेने का प्रयत्न किया था। चीरीक्वी अनूप (पूर्व से पश्चिम तक ३५ मील लम्बा और १२ मील चौड़ा है। यह इतना गहरा है कि इसमें सब कहीं लड़ाई के जहाज़ चल सकते हैं। पड़ोस का स्थल ६०० फ़ुट ऊंचा है। कहीं कहीं इसकी ऊंचाई २००० फुट हो गई है। यहां की जलवायु बड़ी सुन्दर है। यही यूनाइटेड फ्रूट कम्पिनी केला उगाने का काम करती है। चेंक्वीनोलो नदी केला उगाने के लिये अत्यन्त उपयोगी है। कहते हैं इस प्रान्त में कोयला भी बहुत है।

बोराडेल टोरो नगर में लगभग ८००० मनुष्य रहते हैं। यही नगर प्रान्त की राजधानी है। यह नगर एलमरेंटी बे (खाड़ी) के मुहाने पर एक द्वीप में स्थिति है। यहां से फल बहुत बाहर जाता है। प्रायः प्रतिदिन पांच जहाज और पांच छः बड़ी नावें फलों को लाद कर यहां से प्रतिदिन बाहर जाती हैं।

बोका डेल टोरा प्रान्त के दक्षिण-पूर्व में चीरीक्वी प्रान्त स्थित है। इस प्रान्त का कुछ तट अटलांटिक

और कुछ तट प्रशान्त महासागर की ओर है। डेविड नगर इस प्रान्त की राजधानी है। यहां लगभग ६००० मनुष्य रहते हैं। यह प्रान्त अन्न और ढोर के लिये प्रसिद्ध है। यहां कुछ लोग बाहर से आकर बस गये हैं। यहां कई खानों के स्पेन वासी सोना निकाल ले गये। इस समय इन खानों का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। यहां कोलम्बस के आने के पूर्व की पुरानी सभ्यता के चिन्ह मिलते हैं। जो कला मेक्सिको में थी वह इधर दक्षिण की ओर फैल गई। यहां रंगे हुये पत्थर और पुरानी कब्रें अक्सर मिल जाती हैं। इन कब्रों को खोदने पर पुराने मिट्टी के बर्तन और सोने के आभूषण मिलते हैं।

अधिक पूर्व में वेरागवा का प्रान्त है। अटलांटिक महासागर की ओर इस प्रान्त का तट कुछ हो मील लम्बा है। प्रशान्त महासागर की ओर इस प्रान्त का तट २०० मील लम्बा है। यह अपने सुन्दर द्वीपों और मांटीजो की खाड़ी के लिये प्रसिद्ध है। यहां स्थल भर में दूसरे नम्बर का बन्दरगाह है। कोइबा द्वीप इस प्रजातन्त्र में सब से बड़ा है। यह २० मील लम्बा

है और जंगल से ढका है। इस द्वीप की भूमि उपजाऊ है। लेकिन यहां बहुत कम मनुष्य रहते हैं। जिकास द्वीप अधिक आगे बाहर की ओर समुद्र में है। यह बड़ा सुन्दर है और समुद्र तल से १४०० फुट ऊंचा है। मांटीजो की खाड़ी १४ मील लम्बी और ६ मील चौड़ी है। इस खाड़ी के द्वार पर १५ मील लम्बा सेबाको द्वीप स्थित है। इससे यहां प्राकृतिक बन्दरगाह बना दिया है। वेरागवास और लाससेंटो के छोटे प्रान्त मिलकर एक प्रायद्वीप बनाते हैं जो स्थल संयोजक के दक्षिणी सिरे तक चला गया है। इसके बाद तट उत्तर में कोकिला प्रान्त की ओर मुड़ जाता है। इन तीनों छोटे प्रान्तों में बहुत कम उन्नति हुई है। इनमें जनसंख्या भी कम है। इस जनसंख्या में दस प्रतिशत स्पेनियर्ड, १० प्रतिशत चाल्गे इण्डियन और ८० प्रतिशत हब्शी हैं। तट के समीप हब्शी अधिक हैं। पहाड़ियों में रेड इण्डियन लोगों की अधिकता है।

इस प्रजातन्त्र में अच्छी सड़कों का अभाव है। अधिकतर पगडंडियां हैं जिन पर वर्षा ऋतु में चलना असम्भव हो जाता है। जहां नावें नहीं चल सकतीं

वहां सामान भेजना भी कठिन है। यह प्रान्त बड़े उपजाऊ हैं। साधारण परिश्रम से यहां केला धान और नारियल बहुत अच्छे आते हैं।

कोलन प्रान्त स्थल संयोजक के धुर उत्तरी सिरे पर है। इस ओर कोलन नगर विदेशियों के प्रयत्न से बसाया गया। पहले इसे एस्पिनवाल कहते थे। इसे १८५० ई० में पनामा रेल रोड कम्पिनी ने बसाया था। १५०२ ई० में कोलम्बस अपनी अन्तिम समुद्र-यात्रा में यहां आया था। उसने एक स्थान को नाम प्यूटोंबेलो (सुन्दर बन्दरगाह रक्खा। कोलन से कुछ ही दूर उसी तट पर सैनब्लास की खाड़ी है। यह नाम इसी नाम के रेड इण्डियन फिरको के कारण रक्खा गया। सैन ब्लास जाति के रेड इण्डियन अजेय निकले। उनको किसी ने नहीं जीत पाया। न उनको कोई वर्ण संकट बना सका। इस तट के नारियल बड़े अच्छे होते हैं।

सैन ब्लास के प्रदेश में एक भी योरुपीय उपनिवेश नहीं हैं। पनामा का प्रान्त राष्ट्र के पूर्वी सिरे पर है। इसका तट दोनों महासागरों की ओर है। इस

प्रान्त में ढोर पालने का काम होता है। विदेशी पूंजी वाली यहां कई कम्पिनियां बन गई हैं। यह कम्पिनियां केला, नारियल, रबर और केकाओ उगाने और बाहर भेजने के काम में लगी हैं। एक अंग्रेज़ी कम्पिनी महोगनी और दूसरी इमारती लकड़ी चीरने का काम करती है। तुइरा नदी के स्रोत के समीप कोलम्बिया की सीमा के पास डेरियन गोल्ड माइनिंग (अंग्रेज़ी) कम्पिनी सेना निकालने का काम करती है। पनामा प्रान्त में समस्त प्रजातन्त्र के एक तिहाई प्राकृतिक बन्दरगाह स्थित हैं। डेरियन बन्दरगाह के द्वार पर एक बड़ा द्वीप स्थित है। इसके दोनों ओर गहरी सुरक्षित धारायें हैं। इनके आगे ३० मील लम्बा और १५ मील चौड़ा बन्दरगाह है। यहां संसार की सभी जातियों की जलसेनायें सुरक्षित रह सकती हैं। यहां पन्द्रह बीस फुट ऊंचा ज्वार-भाटा आता है। बन्दरगाह के तट पर ख़ुश्क डाक हैं। प्राकृतिक बन्दरगाहों की अधिकता होने पर भी पनामा की जल सेना प्रबल नहीं है। सैन मिगुयल खाड़ी के मुहाने पर पर्ल द्वीप स्थित हैं। यह द्वीप समूह ३० मील लम्बा है। इस

समूह में १६ बड़े और असंख्य छोटे द्वीप स्थित हैं। ईसाडेलरे १० मील लम्बा है। जिन द्वीपों में मीठा पानी मिलता है उनमें लोग बसे हुये हैं। यहां नारियल और अनन्नास बहुत होते हैं। लेकिन सबसे अधिक आमदनी मोतियों से होती है।

पनामा स्थल संयोजक के पूरे देश में नदियों का जाल सा बिछा हुआ है। पहाड़ प्रशान्त महासागर की अपेक्षा अटलांटिक तट के अधिक पास है। अतः अधिकतर बड़ी नदियां दक्षिणी ढाल पर स्थित हैं। रिओ काकिला डेल नार्टी कोकिला प्रान्त से निकलती है और कोलन प्रान्त को पार करके केरिबियन सागर में गिरती है। चाग्रीस नदी का पानी पनामा नहर को पोषण करता है। यह १०० मील लम्बी है। तुयरा या रिओ डेल सेन्टा मेरिया (नदी) सबसे अधिक लम्बी है। इसमें मुहाने (डेरियन) से पचास मील भीतर तक नावें चल सकती हैं।

पनामा के अधिकतर पर्वत आग्नेय उत्पत्ति के हैं। पर इस समय यहां कोई जाग्रत ज्वालामुखी नहीं है। भूचाल अवश्य आजाया करते हैं। मैदान कम हैं। प्रायः सब कहीं विषम भूमि है।

जलवायु

पनामा प्रजातन्त्र की जलवायु को पहले लोग बहुत बुरा समझ बैठे थे। यहां सब से अधिक गरम समय दोपहर के पश्चात २ और चार बजे के बीच में होता है। सब से ठंडा समय प्रातः छः और सात बजे के बीच में (७४ अंश) होता है। पनामा नगर में औसत तापक्रम नवम्बर में ८१'६ अंश और मार्च में ८६ अंश फारेन हाइट होता है। साधारणतया परम तापक्रम ८४ अंश और लघु तापक्रम ७५ अंश होता है। विषुवत रेखा के इतने (१० अंश से कम) पास होने पर भी यहां का तापक्रम अधिक बुरा नहीं है। इस देश में वार्षिक वर्षा १४० इंच होती है। कभी कभी १८० इंच तक पानी बरस जाता है। लेकिन पनामा नगर में ६० इंच से अधिक वर्षा नहीं होती है। कोलन नगर में वर्ष भर में १६६ दिन वर्षा होती है। पनामा नगर में १४० दिन वर्षा के होते हैं। आधे दिसम्बर से आधे अप्रैल तक खुश्क ऋतु होती है। शेष ८ महीनों में पानी बरसता रहता है।

वनस्पति

वनस्पति और पशु

विषुवत रेखा के समीप स्थित होने से पनामा की प्राकृतिक वनस्पति सब कहीं घना जंगल है। एक प्रकार से यह जंगल सहारा रेगिस्तान या समुद्र के समान डरावना है। वैसे यहां तरह तरह के सुन्दर दृश्य मिलते हैं। जहां कहीं मूल निवासियों ने जंगल को काटकर खेत बनाये हैं उनमें भी प्राकृतिक वनस्पति इतनी तेजी से उग आते हैं कि खेतों को साफ रखना कठिन हो जाता है। जंगल की सुन्दरता का पूरा आनन्द लेने के लिये पैदल जाना चाहिये। यहां सब कहीं हरियाली है। लेकिन तरह तरह के फूल भी मिलते हैं। पेड़ इतने प्रकार के हैं कि उनकी सूची बनाना कठिन है। पेड़ों के अतिरिक्त यहां कई प्रकार की लतायें मिलती हैं। कुछ पेड़ बहुत ऊंचे हैं। इनकी लकड़ी बड़ी कड़ी है। वनस्पति की अधिकता ने पशुओं को भगा सा दिया है। यहां एक छोटा हिरण होता है। यही टापीर होता है जो प्रायः नई दुनिया का हाथी कहलाता है। यहीं प्राचीन जाति का इगुयाना होता है। चीते की जाति के पशु यहां बहुत थोड़े

होते हैं। बड़े पशुओं की कमी होने पर भी चींटी आदि रेंगने वाले जन्तु अधिक हैं। तितलियों की संख्या अपार है। बीच बीच में जहां जंगल साफ कर लिया गया है वहां इण्डियन लोग धान उगाते हैं यहीं केला नारंगी और नारियल भी बहुत होता है।

पनामा की जन संख्या लगभग ५ लाख है। ५२,००० गोरे, १ लाख हब्शी, ३५,००० इण्डियन ३१०० एशियावासी ३ लाख वर्ण शंकर हैं। पनामा की अधिकतर जन संख्या नगरों में बसी है। पनामा नगर की जन संख्या ८३,००० और कोलन नगर की जनसंख्या ३४,००० है। इस छोटे से देश में एक विश्वविद्यालय ७ बड़े स्कूल और ५८४ देहाती स्कूल हैं। पनामा देश में जल सेना या स्थल सेना नहीं है। केवल १२०० पुलिस सिपाही हैं। कोलन के पूर्व में पोर्टो बेलो बन्दरगाह है जहां कोलम्बस का उपनिवेश नष्ट कर डाला गया था। बोकासडेल टोरो नगर केला बाहर भेजने के लिये प्रसिद्ध है। प्रशान्त महासागर तट पर कोस्टारिका की सीमा के पास डेविड नगर चीरोकी प्रांत की राजधानी है।

देश दर्शन

पनामा प्रजातंत्र की धारा सभा में ४६ सदस्य होते हैं। यह चार वर्ष के लिये चुने जाते हैं। प्रतिशत १०,००० मनुष्य के पीछे एक सदस्य चुना जाता है। पनामा की राष्ट्र भाषा स्पैनिश है। पनामा देश के लोग कई वर्गों में विभाजित हैं। स्पेन वंश के गोरे सर्वोच्च गिने जाते हैं। यह बड़े बड़े जागीरदार हैं। इन्हीं में अधिक अरब वाले दूसरे विदेशी लोग शामिल हैं। इनकी संख्या कम है। पर इनका प्रभुत्व बहुत है। दूसरे लोग इनके ऋण से दबे रहते हैं। इसलिये वे इनके विरुद्ध एक शब्द भी नहीं निकाल सकते हैं। साधारण जनता की दशा शोचनीय है।

इण्डियन लोगों में दो प्रधान जातियां हैं। चोन्गे लोग अधिक शुद्ध हैं उनमें वर्णशंकर नहीं हैं। वे पर्वतों पर मिलते हैं सैन ब्लास इण्डियन लोगों की संख्या २०,००० है। उनका यह अभिमान है कि उनकी किसी स्त्री वर्णशंकर बच्चा नहीं जन्मा। न उनके किसी पुरुष ने दूसरी जाति की स्त्री से संसर्ग किया। वे विदेशियों के शत्रु नहीं हैं। वे कोलन में आकर विदेशियों से सुई, नमक, कपड़ा आदि आवश्यक पदार्थ नारियल और रबर

से बदल ले जाते हैं लेकिन वे विदेशियों को अपने तट पर रात्रि में नहीं ठहरने देते हैं। दिन के समय भी कोई गोरा विदेशी उनकी स्त्रियों को नहीं देख पाता है। जब वह किसी गांव के समीप आता है तब स्त्रियां झाड़ियों में छिप जाती हैं। यह लोग बड़े अच्छे तैरने वाले और नाव चलाने वाले होते हैं। कहते हैं एक सैन ब्लास इण्डियन एक छोटी नाव काबुका में १०० नारियल लाद कर ले जा रहा था। इसी बीच में समुद्र में तूफान उठा और उसकी नाव उलट गई। फिर भी वह ६० नारियल इकट्ठे करके बाजार पहुँच गया।

पनामा में हब्शी लोगों को लाने का काम स्पेन वालों ने आरम्भ किया था। यहां के प्राचीन स्वाधीन रेड इण्डियन गोरों की गुलामी पसन्द नहीं करते थे। अतः यहां मज़दूरी कराने के लिये हब्शी लाये गये। लेकिन हब्शियों पर उनकी शक्ति से अधिक बोझा लादा जाता था। उनसे बहुत काम लिया जाता था और उनके साथ बुरा बर्ताव होता था। अतः हजार हब्शी मर गये। फिर भी यहां बिक्री के लिये

लाखों हब्शी गुलाम अफ्रीका से आते रहे। इससे कुछ ही समय में यहां हब्शी बहुसंख्या में हो गये।

कुछ लोग वर्णशंकर हैं। पनामा के अधिकतर लोग रोमन केथलिक इसाई हैं। धनी लोग नगरों के बड़े बड़े घरों में रहते हैं। साधारण लोग देहात के छोटे घरों में रहते हैं।

पनामा का अधिकतर (५८ प्रतिशत) व्यापार संयुक्त राष्ट्र अमरीका से होता है। दूसरा स्थान जापान का है। जापान से १६ प्रतिशत व्यापार होता है। बाहर जानेवाली वस्तुओं में एक तिहाई केला रहता है। यहां का सिक्का बल्बोआ कहलाता है जो प्रायः डेढ़ रुपये के बराबर होता है।

पनामा नगर प्रजातन्त्र की राजधानी है। यह पनामा नहर का दक्षिणी या प्रशान्त महासागरीय तट का अन्तिम स्टेशन है। यह पश्चिमी गोलार्द्ध का सब से पुराना उपनिवेश है। यह १५१९ में बसाया गया था। पनामा नगर प्रायः सब कहीं नहर के कटिबन्ध से घिरा हुआ है। प्राचीन नगर को १६७१ में हेनरी मोर्गन ने नष्ट कर डाला। वर्तमान नगर प्राचीन

स्थिति से ५ मील दूर है। वर्तमान नगर एक पथरीले प्रायद्वीप पर बसा हुआ है। माउंट एन्कन इसका सब से ऊंचा (५६० फुट) भाग है। सुन्दर तबोगा द्वीप ६३५ फुट ऊंचा है। पनामा बन्दरगाह बल्बोआ कनाल जोन या नहर कटिबन्ध में स्थित है। पर यह रेल और ट्रैम द्वारा इससे जुड़ा हुआ है और संसार भर में प्रसिद्ध है।

कोलन नगर अटलांटिक तट की ओर एक द्वीप पर स्थित है। यह पौन मील लम्बा और एक तिहाई मील चौड़ा है। इसका तल समुद्र से कुछ ही ऊंचा है। यह रेल के एक बांध द्वारा प्रधान स्थल से जुड़ा हुआ है। पहले एस्पियनवाल कहलाता था। १८०५ में इसे पनामा रेलवे कम्पिनी ने बसाया था।

पनामा रेलवे

१८४६ ई० में सोने की खानों का पता पाकर दूसरे देशों की भीड़ यहां आने लगी। लेकिन यहां मार्गों का अभाव था। १८५० ई० में रेलवे लाइन

का बनना आरम्भ हुआ। १८५५ में एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक रेलवे लाइन बनकर तैयार हो गई। औसत से एक वर्ष में ८ मील लाइन बनी।

पहले प्यूर्टो बेलो से रेलवे लाइन को आरम्भ करने का निश्चय किया गया था। लेकिन एक न्यूयार्क के एक सट्टेवाले ने पड़ोस की ज़मीन मोल ले ली और बहुत अधिक लाभ उठाना चाहा। अतः रेल का आरम्भ नेवी बे में हुआ। लाइन के बनाने में सबसे बड़ी बाधा यहाँ का जलवायु ने डाली। यहां सदा गरमी रहती। कभी तेज़ धूप हो जाती कभी पानी बरसने लगता। पत्तियों और पौधों के सड़ने से यहां की वायु और दूषित हो जाती। बीमारी के डर से अच्छा डाक्टर भी यहां रहना पसन्द नहीं करते। साधारण मज़दूरों को पीला बुख़ार और अतरे का ज्वर सताता था। बाहरी लोगों में औसत अधिक मृत्यु होती थी। विदेशी हब्शियों में चालीस में १ गोरों में तीस में एक और चीनियों दस में एक मर जाता था।

इस लाइन के बनाने में जो सामान लगा वह सब बाहर से आया। रेलवे स्लीपर संयुक्त राष्ट्र

अमरीका से आये रेल की पटरियां और धातु का दूसरा सामान संयुक्त राष्ट्र अमरीका या इंगलैंड से आया। मज़दूरों के खाद्य पदार्थ भी न्यूयार्क से आते थे। १८५१ के अक्तूबर मास तक ८ मील लाइन बिछ गई। यहां गाटून में पहली बार कड़ी ज़मीन मिली। इससे पहले समुद्र के किनारे तक गोरन का दलदल था। इस दलदली भूमि में कड़ी तह का पता नहीं लगता था। इस भाग में असंख्य पांटूनों (पीपों) के ऊपर रेल की पटरियां बिछाई गई थीं। १८५४ के जनवरी मास तक बीच की पहाड़ी तक ३० मील लम्बी लाइन बिछ गई थी।

इसी बीच में प्रशान्त महासागर की ओर से भी ११ मील लाइन तैयार हो गई थी। इस ओर भी दलदल थे और काम धीमी चाल से हुआ। २७ जनवरी १८५५ में लाइन पूरी हो गई दूसरे दिन २८ जनवरी १८५५ को एक रेलगाड़ी ने अटलांटिक तट से प्रशान्त महासागर तट तक यात्रा पूरी की। इस लाइन के बनाने में लगभग ७० लाख डालर (प्रायः २ करोड़ रुपये) खर्च हुये। लेकिन बनने के पहले ही रेलवे कम्पनी

ने लागत का एक तिहाई धन वसूल कर लिया। सोने की खोज में यात्रियों की इतनी भीड़ रहती थी कि जैसे जैसे लाइन बनती जाती थी वैसे वैसे यात्री उतनी ही दूर तक खड़ी हुई गाड़ियों में यात्रा करने के लिए उत्सुक रहते थे। इस लाइन की लम्बाई प्रायः ४७ मील है। इसे १७० छोटी नदियां और नाले पार करने पड़ते हैं। इनमें तीस के ऊपर १० फुट ऊंचे पुल बने हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के आर पार रेलों के खुल जाने से इस लाइन में यात्रियों की संख्या बहुत कम हो गई।

रेलवे लाइन का मध्यवर्ती स्टेशन मटाचिन है। यहां दोनों ओर से आनेवाली लाइनों का मेल होता है। कुलेब्रा लाइन पर सब से ऊंचा (२३८½ फुट) ऊंचा स्थान है। यह राकी पर्वत के जल-विभाजक पर स्थित है। यहां वनस्पति बड़ी सघन है। रेलवे के मज़दूरों को लाइन साफ रखने के लिये लगातार पानी वनस्पति काटनी पड़ती है। यदि छः महीने तक लाइन पर गाड़ियां न चलें तो समस्त लाइन जंगल से घिर जावे। जल विभाजक से उतरने पर माउंट एंकन की

आग्नेय चोटी दिखाई पड़ती है। इसके आगे गोरन के दलदल पड़ते हैं फिर पनामा शहर आ जाता है।

इस समय पनामा में समस्त रेलवे लाइनों की लम्बाई २५७ मील है। सड़कें प्रायः ५०० मील हैं।

पनामा प्रजातन्त्र के पास ही पर्ल द्वीप स्थित है। यहां समुद्र से मोती निकाले जाते हैं। इससे राज्य को बड़ी आय होती है। पर यहां सदियों से मोती निकालने का काम होता रहा है। इससे जितने अधिक मोती पहले निकाले जाते थे। उनमें बड़ी कमी हो गई। मोती बड़े मूल्यवान होते हैं। लेकिन सीप भी बड़े काम की होती हैं। इनसे बटन हत्थे और आभूषण बनते हैं। प्रतिवर्ष कई टन सीप संयुक्त राष्ट्र अमरीका और योरुप को जाती है। डुबकी मारकर मोती निकालने का काम हब्शी करते हैं।

पनामा प्रजातन्त्र की प्रधान सम्पति गाय बैल मक्का, धान, नारियल, कहवा और कोकोआ है। डेरियन ज़िले में सोना निकाला जाता है। यह एक ब्रिटिश कम्पिनी है। इसे बड़ा लाभ हुआ।

अपनी चौथी समुद्र यात्रा में कोलम्बस पनामा के तट

पर पहुंचा। जहां उसने लंगर डाला वहां फल, मछलियां और शिकार के पशु अधिकता से थे। अतः उसने इस स्थान का नाम प्यूर्टो डी बेस्टीमेएटो या साधनों का बन्दरगाह रक्खा। वह बेलन नदी के मुहाने के पास भी गया। यह छोटो नदी कोलन और वेराग्वा प्रान्तों के बीच में सीमा बनाती है। यह कोलम्बस की अन्तिम यात्रा थी वहां जब से वह स्पेन को लौटा तो बीमार पड़ा और मर गया।

पनामा में स्पेन वालों को जो निवासी मिले वे ठोस सोने के आभूषण पहने हुये थे। उनके घरों की दीवारें भी पक्की थीं। उनके पुरोहित धर्म का ज्ञान रखते थे। वे प्रायः जादू टोना में विश्वास रखते थे। एक स्थान पर स्पेन वालों ने तीन घंटियों के बदले में शुद्ध सोने की १७ थालियां लीं। एक गांव में उन्हें सोने के १६ आभूषण मिले। लेकिन स्पेन वालों के व्यवहार से पनामा वासी बिगड़ गये। जो उपनिवेश कोलम्बस ने यहां बसाया वह नष्ट कर डाला गया। १५१० ई० में पनामा के स्पेनिश गवर्नर ने दूसरा उपनिवेश बसाया। १५१३ में बल्बोआ ने स्थल संयो-

जक को पार कर के प्रशान्त महासागर का पता लगाया १५१९ ई० में पनामा नगर बसाया गया। नई दुनिया का अपार धन पनामा बन्दरगाह के मार्ग से पोर्टोबेलो होकर स्पेन पहुंचने लगा। १७१८ ई० में पनामा कोलम्बिया को मिला लिया गया। १८४१ ई० में पनामा फिर कोलम्बिया से प्रथक हो गया। लेकिन कोलम्बिया ने बिद्रोह को दबाकर पनामा को फिर मिला लिया। १८९८ से १९०३ तक यहां लगातार विद्रोह होता रहा। इस बार पनामा को संयुक्तराष्ट्र अमरीका से सहायता मिला और पनामा एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्र बन गया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका को पनामा नहर निकालने के लिये स्थल संयोजक में १० मील चौड़ी भूमि अटलांटिक से प्रशान्त तट तक सस्ते मूल्य में मिल गई।

पनामा का मोरा

मोरा का देश हँसिया की तरह टेढ़ा लेकिन बहुत ही पतला है। यह ऊपर की ओर उत्तरी अमरीका को दक्षिणी अमरीका से जोड़ता है। इसी से इसे पनामा का स्थलसंयोजक भो कहते हैं। ऊपर से आने वाली

राकी की पहाड़ी दीवार यहां बहुत नीची और पतली हो गई है।

स्पेन वालों ने अटलांटिक महासागर के किनारे का पता लगाने के बाद देश के भीतर जंगल में घुसना आरम्भ किया। उनका एक सरदार जब भीतर की एक पहाड़ी के ऊपर चढ़ा तो उसे दूसरी ओर भी समुद्र दिखाई दिया। इस ओर प्रशान्त महासागर के किनारे पर पनामा नगर बसाया गया। हार्न अन्तरीप की अपेक्षा स्पेन के लिये दक्षिणी अमरीका का पश्चिमी तट यहां से पास पड़ता था। इसलिए इनका साम्राज्य के मन्दिरों और महलों की लूट खसोट और पीरू की खानों का सोना चांदी इसी मार्ग से स्पेन पहुँचता था। भेजने से पहले इसको सुरक्षित रखने के लिये पनामा के क़िले में मजबूत दीवारें बना दी गई थीं। कुछ दीवारें ३० फुट ऊँची और ५० फुट मोटी थीं। बीच में पहरे के लिये ऊँची बुर्जी थी। यहां से वह सोना खच्चरों पर लद कर अटलांटिक महासागर के किनारे पर बने हुए कोलन बन्दरगाह में पहुँचता था। वहाँ से स्पेन के जहाज़ इस सोने को घर ले जाने के लिए तैयार रहते

थे। आगे चल कर स्पेन का साम्राज्य क्षीण हुआ और पनामा का किला भी गिर गया। लेकिन योरुप और पश्चिमी अमरीका के बीच छोटा रास्ता पनामा में होकर चलता ही रहा।

फिर फ्रांस वालों ने अटलांटिक और प्रशान्त महासागर को जोड़ने के लिये नहर निकालने की सोची। लेकिन नहर बनाने का ठीक ठीक काम संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने किया। पहले पनामा का देश कोलम्बिया के प्रजातन्त्र में शामिल था। इसलिये संयुक्तराष्ट्र अमरीका वालों ने एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक लगभग ५० मील लम्बी और दस मील चौड़ी ज़मीन की पेटी मोल लेनी चाही। इस ज़मीन के लिये उन्होंने तीन करोड़ रुपये एकमुश्त और हर साल १८ लाख रुपये देने का वादा किया। लेकिन कोलम्बिया वाले इतने दाम पर ज़मीन बेचने के लिये राज़ी न हुए। फिर पनामा देश कोलम्बिया से अलग हो गया और पनामा वालों ने यह दाम ख़ुशी से स्वीकार कर लिया।

लेकिन नहर के बनाने में बड़ी कठिनाइयाँ थीं।

इस देश में मच्छड़ बहुत थे। इनके काटने से मज़दूरों को पीला आज़ार हो जाता था। इससे बहुत से मज़दूर मर गये। मच्छड़ों को नष्ट करने के लिए दलदल सुखाये गये और बँधे हुए पानी में मिट्टी के तेल के हज़ारों पीपे छोड़े गये। फिर खुदाई शुरू हुई। एक मील लम्बी खाई खोदने में कितनी कठिनाई होती है। लेकिन यदि खाई लगभग ५० मील लम्बी हो तो क्या हाल होगा? तिसपर यदि कहीं ज़मीन फिसल-फिसल कर बीच में आ जावे तो कठिनाई और भी अधिक बढ़ जाती है। पनामा नहर की चौड़ाई अधिक से अधिक चौड़ी सड़क से भी चौगुनी है। इसकी गहराई भी लगभग ८५ फुट है। बीच वाले भाग में नहर समुद्रतल से ८५ फुट अधिक ऊँची है। इससे वह पानी से एक ऊँचे पुल की तरह मालूम होती है जो अटलांटिक महासागर और प्रशान्त महासागर को जोड़ती है।

खोदने का काम मशीनों से लिया गया। चट्टानें बारूद भर कर और अलग लगा कर तोड़ी जाती थीं। बारूद में आग लगाने से तोप की सी आवाज़ होती

थी। कड़ी चट्टानें टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाती थीं। उनकी धूल से बादल सा छा जाता था। कई लाख मन बारूद इस काम में ख़र्च हुई। खुदी हुई मिट्टी इतनी अधिक हो जाती थी कि उसको ले जाने के लिए कहीं कहीं १२ रेलवे लाइनें बना दी गई थीं। तीस तीस डब्बो से भरी हुई सौ से ऊपर रेलगाड़ियां रोज़ाना इस मिट्टी को ढोतो थीं। बीसों इञ्जनों की आवाज़ दिन रात होती थी। कुछ इंजिन ज़मीन खोदते, कुछ मिट्टी उठा कर गाड़ियों में भरते और कुछ भरी हुई गाड़ियों को खींचते थे। बहुत सी मिट्टी बलबोआ के पास समुद्र में डाली गई। समुद्र की लहरों के वेग को रोकने और बन्दरगाह को सुरक्षित रखने के लिये यहां एक बड़ी दीवार बना दी गई। कभी कभी यहाँ ३० हज़ार मज़दूर काम करते थे। इनमें सात आठ हज़ार गोरे मज़दूर थे जो इटली और स्पेन से आये थे। दूसरे अधिकतर मज़दूर जमैका, ट्रिनीडाड और बरबेडास से आये थे। एक गज लम्बी एक गज़ चौड़ी और एक गज़ गहरी ज़मीन को एक घन गज़ ज़मीन कहते हैं। पनामा नहर से सब मिला कर २६,३०,००,००० घन गज़ ज़मीन खोदी गई।

सब से ऊँचे भाग में पनामा नहर का पानी समुद्रतल से ८५ फुट ऊँचा है। समुद्र के निचले तल से नहर के ऊँचे भाग में पहुँचने के लिये नहर में दोहरे झाल बना दिये गये हैं। अगर तुम प्रशान्त महासागर के किनारे पर बसे हुये नहर के बलबोआ बन्दरगाह से नहर को पार करो तो पहले आठ मील तक नहर एक नदी की तरह मालूम होगी। इसके बाद पहला मीराफ्लोर झाल पड़ता है। लगभग १००० फुट लम्बा कांक्रीट का हौज़ सा बना है। झाल के दोनों ओर पटरियों पर अजब सूरत के बिजली के मोटर चलते हैं। इन्हें म्यूल कहते हैं। यह मोटर जहाज़ को अपने इञ्जिन के ज़ोर से चलने की आज्ञा इसलिये नहीं दी जाती है कि कहीं वह किनारों को नुक़सान न पहुँचा दे। चार बिजली के मोटर (म्यूल) बड़े से बड़े जहाज़ को खींचने के लिये काफी हैं। लेकिन सावधानी के लिये ६ मोटर (३ दाहिनी ओर और ३ बाईं ओर) जहाज़ में जोते जाते हैं।

जब जहाज़ हौज़ के बीच में पहुँच जाता है, तब पीछे विशाल फाटक बन्द कर दिये जाते हैं। एक एक

फाटक लगभग डेढ़ सौ फुट चौड़ा, ८५ फुट ऊँचा और ७ फुट मोटा है। मोटाई के कुछ भाग में हवा भरी रहती है। इससे लोहे के फाटकों को पानी पर तैरने में आसानी रहती है। फाटक इस सफ़ाई से बने हैं कि उनके बन्द हो जाने पर भीतर का पानी बाहर नहीं जाने पाता है। बन्द करने का काम बिजली का बटन दबा देने से ही हो जाता है। झाल दुहरा है। इससे ऊपर नीचे जहाज़ दोनों ओर आ जा सकते हैं। भीतर आने वाला पानी जहाज़ को ऊपर उठाता जाता है। कुछ ही समय में इस पानी में और आगे वाले झाल का तल बराबर हो जाता है। इस तरह पीछे वाला फाटक बन्द होता और आगे वाला खुलता है। कुछ ही समय में जहाज़ समुद्रतल से ५५ फुट ऊँची मीरा फ़्लोर झील में पहुंच जाता है। झील में एक मील चलने के बाद जहाज़ मिग्वेल झील में पहुँचता है जो समुद्रतल से ८५ फुट ऊँचा है। नहर का यही सब से ऊँचा भाग है। इसे गोलार्ड कट कहते हैं। दोनों ओर किनारे पहाड़ी हैं और उष्ण कटिबन्ध की हरियाली से ढके हैं। ९ मील रास्ता टेढ़ा है।

समुद्र की किसी ओर दिखाई नहीं देता है। स्थल के इन ऊंचे किनारों को देख कर यात्री को विश्वास नहीं होता है कि उसका जहाज़ समुद्र की लहर पर चल रहा है।

गोलार्ड कट के आगे गाटून झील पड़ती है। यह झील २७ मील लम्बी है और १६४ वर्गमील ज़मीन घेरे हुए है। चाग्रोस नदी में बांध बनाने से यह झील बन गई। कहीं कहीं डूबे हुए बन की चोटियां इस समय भी दिखाई देती हैं। इस गहरे पानी को देख कर लोगों को विश्वास नहीं होता कि जहां इस समय झील की गहरी तली है वहीं कुछ वर्ष पहले हरे भरे गाँव थे।

गाटून झील में दो तीन घंटे चलने के बाद जहाज़ गाटून झील में पहुँच जाता है। यह फिर मीरा फ्लोर की तरह एक ऊँचे ज़ीने के समान है। इसमें हो करके जहाज़ फिर उतरता उतरता नीचे अटलांटिक महासागर के तल में पहुँच जाता है। यहां दुनियां भर में सब से बड़ा बाँध बनाना पड़ा। बाँध का ऊपरी भाग डेढ़ मील लम्बा है। निचला भाग में लगभग आध मील

है। इसका सब से ऊंचा भाग समुद्र तल से पाँच फुट ऊँचा है। पानी के ज़ोर को सहने के लिये बाँध बहुत मज़बूत बनाया गया है। जब बिजली के मोटर जहाज़ में दुबारा मज़बूती से लग जाते हैं तब आगे के फाटक खोल दिये जाते हैं जहाज़ धीरे धीरे नीचे होता जाता है और अन्त में वह समुद्र तल पर आ जाता है। क्रिस्टोबाल में जहाज़ मुसाफिर चढ़ाने और उतारने के लिये ठहरता है। जिस तरह प्रशान्त महासागर के तट पर बलबोआ बन्दरगाह संयुक्तराष्ट्र के अधिकार में है; लेकिन पनामा शहर पनामा प्रजातन्त्र की राजधानी है, उसी तरह क्रिस्टोबाल शहर संयुक्तराष्ट्र के अधिकार में है; लेकिन इससे मिला हुआ कोलन शहर पनामा प्रजातन्त्र के अधिकार में है।

पनामा नहर बनाने में लगभग १ अरब १२ करोड़ रुपये खर्च हुए। लेकिन इसके खुल जाने से न्यूयार्क और सैनफ्रांसिस्को के बीच में ८००० मील का चक्कर बच गया। योरुप के पश्चिमी तट (जैसे लिवरपूल) और उत्तरी अमरीका, मध्य अमरीका और दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी तट के बीच में

६००० मील का चक्कर बच गया। इसी तरह न्यूयार्क याकोहामा (जापान) और आस्ट्रेलिया के बीच में हार्न अन्तरोप की अपेक्षा पनामा मार्ग से लगभग ३८०० मील कम हो गया। न्यूज़ीलैंड भी २५०० मील पास हो गया।

पनामा नहर में होकर पहला जहाज़ १६१५ के अगस्त महीने में गुज़रा था। उसके बाद तो यहां होकर जाने वाले जहाज़ों की संख्या बढ़ती ही गई। आजकल हर साल ५२०० से ऊपर जहाज़ गुज़रते हैं। संयुक्तराष्ट्र अमरीका के जंगी जहाज़ों को छोड़ कर और सब से चुङ्गी ली जाती है। फिर भी जहाज़ों की भीड़ लगी रहती है। इसलिये बारी बारी से जहाज़ों को यहां होकर गुज़रने की आज्ञा दी जाती है। देरी होने से उसको दूसरे दिन तक ठहरना पड़ता है।

नहर को पार करने में जो कम से कम समय संयुक्तराष्ट्र अमरीका के जंगी जहाज़ को लगा था वह चार घंटा दस मिनट था। साधारण जहाज़ों को इससे कहीं अधिक समय लगता है।

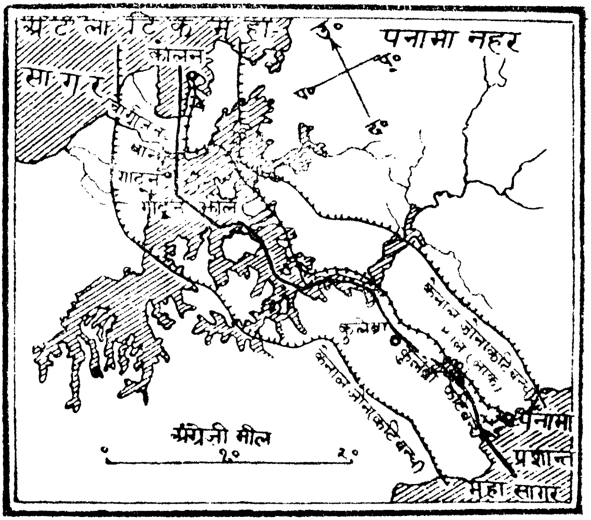
पनामा-दर्शन

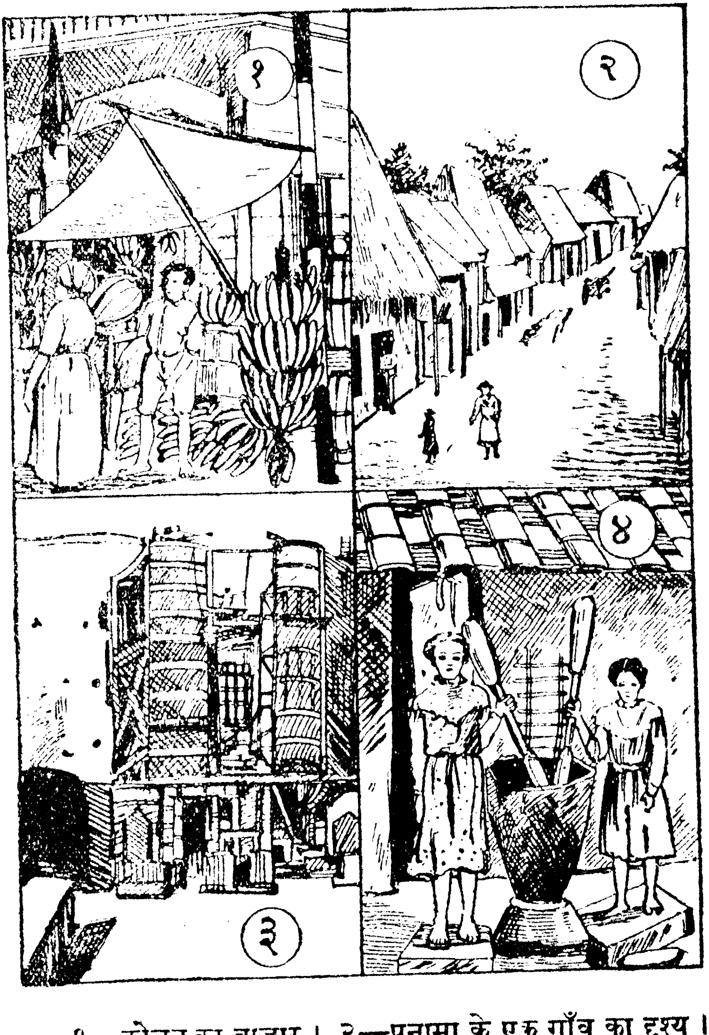
पनामा नहर ने मोरा के देश को दुनिया भर में प्रसिद्ध कर दिया। लेकिन वैसे भी मोरा के देश में बहुत सी चीज़ें होती हैं। पर्ल द्वीप में हब्शी गोताखोर समुद्र से मोती निकालते हैं। पहाड़ी ढालों के हरे भरे जंगलों में कई तरह की बढ़िया लकड़ी के पेड़ होते हैं। एक ज़िले में कुछ सोना निकलता है। लेकिन मोरा का बाप खेती करता है। अधिक वर्षा और कड़ी धूप होने के कारण वह अपने खेत में धान, मकई और दाल उगाता है। उसके बगीचे में केला और नारियल के पेड़ लगे हैं। इनके फलों को मोरा बहुत पसन्द करता है। मोरा का घर नारियल के पत्तों से ही छाया हुआ है। अधिक गर्मी पड़ने से मोरा बहुत कम और हलके कपड़े पहनता है। लेकिन वर्षा से बचने के लिये वह छतरी की तरह एक बहुत बड़ी टोपी लगाता है।

'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल २।)
२—भूतत्त्व १।)
३—भूगोल एटलस १।)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति १)
५—मिडिल भूगोल भाग १–४ मूल्य प्रत्येक भाग ॥=)
६—हमारा देश ।=)
७—संक्षिप्त बालसंसार (नया संस्करण) १)
८—हमारी दुनिया ।–)
९—देश निर्माता ।–)
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग –)॥
११—सीधी पढ़ाई दूसरा भाग –)॥
१२—जातियों का कोष ॥)
१३—अनोखी दुनिया ॥=)
१४—आधुनिक इतिहास एटलस ॥)
१५—संसार-शासन २)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण) १)
१७—स्पेन-अंक ॥–)
१८—ईरान-अंक १)
१९—चीन-अंक १)
२०—चीन-एटलस ॥)
२१—टर्की १)
२२—अफ़ग़ानिस्तान १)
२३—भुवनकोष १)
२४—एबीसीनिया ॥)
२५—गंगा-अंक १)
२६—गंगा-एटलस ॥)
२७—देशी राज्य-अंक २)
२८—पशु-पक्षी-अंक १)
२९—महासमर-अंक १।)
३०—महासमर एटलस ॥)
३१—सचित्र भौगोलिक कहानियाँ ।)
३२—प्राचीन जीवन ॥)
३३—भूपरिचय (संसार का विस्तृत वर्णन) २॥)
३४—वर्नाक्युलर फाइनल परीक्षा के भूगोलप्रश्नपत्र और उनके आदर्श उत्तर (१९२१-३८) तक १)
३५—आसाम-अंक १)
३६—द्वितीय महासमर-परिचय १॥)
३७—संयुक्त प्रांत-अंक ३॥)
३८—महासमर दैनन्दिनी डायरी १)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय ककरहाघाट इलाहाबाद।


पनामा नहर
सागर
कोलन
उ०
द०
पनामा
प्रशान्त
महासागर
अंग्रेजी मील
१०
२०



१—कोलन का बाजार। २—पनामा के एक गाँव का दृश्य।
३—गाटून झील का एक भाग। ४—घरेलू धन्धा।